संस्कृत साहित्य के उन्नयन में महिलाओं का योगदान

श्रीमती अंजना शर्मा
विभागाध्यक्ष, पाण्डुलिपि एवं लिपिविज्ञान विभाग
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

वेदकाल से ले कर आधुनिक काल तक संस्कृत की विदुषियों के जो उल्लेख मिलते हैं उनसे यह तो स्पष्ट है कि संस्कृत के उन्नयन में महिलाओं का योगदान नगण्य नहीं है।

वेदकाल से लेकर अब तक विविध विषमतापूर्ण वातावरण और परिस्थितियों के बावजूद अनेक महिलाएँ न केवल अद्‌भुत विद्वत्ता की धनी रहीं। बल्कि शास्त्रों और काव्यों के लेखन द्वारा उन्होंने कालजयी साहित्य की रचना भी की। वैदिककाल में गार्गी वाचक्नवी, अपाला, आत्रेयी, घोषा, कक्षीवती और मैत्रेयी आदि ब्रह्मावादिनी महिलाओं का नाम तो हम लेते ही रहे हैं, मण्डन मिश्र और शंकराचार्य के शास्त्रार्थ में मध्यस्थ बनने वाली मण्डन मिश्र की विदुषी पत्नी भारती का नाम भी सुविदित है। लीलावती भास्कराचार्य की विदुषी कन्या थी, जिसके नाम पर उन्होंने अपने गणितीय ग्रंथ की रचना की। महिलाओं के योगदान को इंगित करने की दृष्टि से यहाँ काव्य रचना करने वाली कुछ महिला साहित्यकारों का विवरण संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

विज्जिका –

वेदों और उपनिषदों के युग के बाद विदुषियों के नाम बहुत कम मिलते हैं। गत दो हजार वर्षो में कुछ महिलाओं के नाम से लिखे गये काव्य और पद्य अवश्य मिलते हैं, जिनमें कुछ निश्चित ही अद्‌भुत प्रतिभा से सम्पन्न कृतियाँ हैं। इनमें प्रमुख नाम हैं विजयांका का जिसे विज्जिका भी पुकारा जाता था। इस कवियित्री की ऐतिहासिकता का उल्लेख जगह–जगह मिलता है, इतिहासकारों में से कुछ ने इसका समय ईसा की 7वीं सदी (660 ई.) बताया है और कुछ ने ई. 850 से पूर्व। सभी के मत में इसका काल इन दो तिथियों के बीच पड़ता है। सम्भवत: विजया कर्नाटक के चालुक्य वंश के पुलकेशिन् द्वितीय के पुत्र चन्द्रादित्य की पत्नी विजया भट्टारिका थी।

इसकी प्रशंसा बहुत से कवियों ने की है। कल्हण की सूक्तिमुक्तावली में निम्नांकित पद्य प्राप्त होता है –

सरस्वतीव कार्णाटी विजयांका जयत्यसौ।
या वैदर्भगिरां वासः कालिदासादनन्तरम्।।

एक पद्य शार्ङ्गधर पद्धति में उपलब्ध है, जिसमें विजया कहती है कि आचार्य दण्डी ने सरस्वती को सफेद रंग की कैसे बता दिया जब कि काले रंग की जीती जागती सरस्वती मैं बैठी हूँ।

नीलोत्पलदलश्यामां विज्जिकां मामजानता।
वृथैव दण्डिना प्रोक्तं सर्वशुक्ला सरस्वती।।

इसी ने एक अन्य पद्य में यह भी कहा है कि ब्रह्मा वाल्मीकि और व्यास के बाद यदि कोई वन्दनीय कवि हुए हैं, तो वह मैं हूँ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि विजया की रचनाएँ 'अभिधावृत्तिमातृका' आदि ग्रन्थों में मुकुलभट्ट आदि ने उद्धृत की हैं, मम्मट ने भी उद्धृत की हैं और वे अद्भुत चमत्कारयुक्त रचनाएँ हैं। इनकी विशेषता यह है, कि इनमें नारीहृदय की कोमल भावनाएँ इतनी सहजता के साथ वर्णित हैं कि रसनिष्पत्ति में समय नहीं लगता। एक विरहिणी वर्षाकाल में विरहवेदना को असहनीय अनुभव करती हुई कहती है कि मुझे मार डालने के लिए बादल, बूँद, बिजली, कोहरा, हरियाली इनमें से कोई एक भी पर्याप्त होता, पर देखिये एक नन्हीं सी जान के लिए सबने मिल कर एक साथ हमला किया है–

मैघैर्व्योमनवाम्बुभिर्वसुमती विद्युल्लताभिर्दिशो
धाराभिर्गगनं वनानि कुटजैः पूरैर्वृता निम्नगाः।
एकां घातयितुं वियोगविधुरां दीनां वराकीं स्त्रियम्
प्रावृट्काल हताश वर्णय कृतं मिथ्या किमाडम्बरम्।।

एक अन्य पद्य में वह कहती है कि बादल, वायु और मयूर ने उस पर क्रूरता बरती है, यह तो समझ में आती है, पर बिजली नारी होते हुए भी उस पर अकरुण क्यों है ? यह उद्गार हृदय से निकला सा लगता है–

सोत्साहा नववारिभारगुरवो मुञ्चन्तु नादं घनाः,
वाता वान्तु कदम्बरेणुशबला नृत्यन्त्वमी बर्हिणः।
मग्नां कान्तवियोगदुःखजलधौ दीनां विलोक्याङ्गनाम्,
विद्युत् प्रस्फुरसि त्वमप्यकरुणा स्त्रीत्वेऽपि तुल्ये सति।।

इस कवयित्री के अनेक उत्कृष्ट पद्य श्रृंगार के उदाहरण रूप में लक्षण काव्यों में उद्धृत मिलते हैं। उनका प्रतिभा चमत्कार देखते ही बनता है। कुछ ऐसे है जिनमें पर पुरुष के प्रेम का हवाला बड़े चटखारे के साथ दिया गया है।

गंगादेवी

गंगादेवी नामक एक अन्य कवयित्री का पता भी चलता है, जो कर्नाटक की महारानी थी। यह विजयनगर साम्राज्य के सम्राट् विरूपाक्ष के पुत्र चम्पकराय की महारानी थी। इसका लिखा मधुराविजय काव्य मिलता है, जिसमें उसने अपने पति की विजययात्रा का वर्णन किया है। यह प्रसिद्ध है कि यह महारानी झांसी की तरह स्वयं भी योद्धा थी और तलवार लेकर आक्रान्ता विपक्षियों से लड़ी थी। इसका समय मुगलकाल में सन् 1380 के आस-पास प्रतीत होता है। इस काव्य की अधूरी पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई थीं, जिनमें से एक मद्रास से और दूसरी कर्नाटक से प्रकाशित हुई। इसने एक पद्य में इस स्थिति पर करारी चोट की है, कि यवनों के घर जो तोते फारसी सीख जाते हैं, उनकी बजाय अपेक्षा किन्तु अपनी भाषा बोलने वाले उल्लू कहीं बेहतर हैं।

न तथा कटुथूत्कृताद् व्यथा मे ह्रदि जीर्णोपवनेषु घूकलोकात्।
परिशीलितपारसीकवाग्भ्यो यवनानां भवने यथा शुकेभ्यः।।

तिरुमलाम्बा -

एक अन्य कवयित्री भी बहुत महत्त्वपूर्ण है जिसके द्वारा लिखा चम्पूकाव्य संस्कृत साहित्य में सुप्रसिद्ध है। यह भी विजयनगर साम्राज्य की महारानी थी। वहाँ के प्रसिद्ध कृष्णदेवराय के छोटे भाई अच्युतराय की रानी तिरुमलाम्बा (16 वीं सदी) का लिखा हुआ वरदाम्बिकापरिणय नाम का चम्पू काव्य वर्षों तक पाठ्यपुस्तक के रूप में भी रखा गया। यह तंजोर से प्रथमत: प्रकाशित हुआ था और बाद में गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी और हरिदत्त शर्मा की टीका सहित लाहौर से मोतीलाल बनारसीदास ने मुम्बई संस्कृत प्रेस में भी छपवाया था। इसमें तत्कालीन इतिहास वर्णित है। वरदराज के साथ अम्बिका के विवाह के इतिहास का विवरण देते हुए इसमें बहुत सुन्दर गद्यशैली में कथोपकथन मिलते हैं।

शिला भट्टारिका -

एक अन्य प्रसिद्ध कवयित्री का नाम उतना ही बहुचर्चित है। ये है शिला भट्टारिका, राजशेखर ने लिखा है कि पांचाली रीति के उदाहरण शिला भट्टारिका के पद्य हैं शिलाभट्टारिका वाचि बाणोक्तिसु च सा यदि। इस

प्रकार यह मान्यता थी कि वैदर्भी रीति के उत्कृष्ठ उदाहरण जिस प्रकार विजया के पद्य हैं उसी प्रकार पांचाली रीति के उदाहरण हैं, शिलाभट्टारिका के पद्य। राजानरु रुय्यक ने तथा मम्मट ने काव्य प्रकाश में इसके पद्यों को उत्तम काव्य के उदाहरण के रूप में उद्धृत किया है। इतनी प्रसिद्ध कवयित्री होने के बावजूद इसके जीवन परिचय का विवरण प्राप्त नहीं होता है।

अन्य नाम

उपर्युक्त कवयित्रियों के अतिरिक्त 10–15 अन्य नाम भी प्रसिद्ध हैं, धनददेव का एक पद्य शार्ङ्गधर पद्धति में मिलता है। शार्ङ्गधरपद्धतौ धनददेवः –

शिलाविज्जकामारुलामोरिकाद्याः काव्यं कर्तुं सन्ति विज्ञाः स्त्रियोऽपि।
विद्यां वेत्तुं वादिनो निर्विजेतुं विश्वं वक्तुं यः प्रवीणः स वन्द्यः।।

इससे प्रतीत होता है कि शिलाभट्टारिका और विज्जिका के अलावा मारुला, मोरिका आदि महिलाएँ काव्य लिखती थीं। उनके लिखे पद्य भी जगह जगह मिलते हैं। इसमें प्रियम्वदा, विद्या, गौरी, कुटीला, मधुस्तावी, मारुला, मोरिका, पद्मावती, सीता, सरस्वती, इन्दुलेखा और भावक देवी के पद्य मधुरवाणी के सम्पादक श्री श्रीनिवासाचार्य ने विभिन्न ग्रन्थों से जहाँ वे उदाहरण के रूप में लिखे गये हैं, उद्धृत किये हैं। निसंदेह ये सभी पद्य उत्कृष्ट काव्य के उदाहरण हैं।

इस पद्य दक्षिण भारत से ही मधुरवाणी, रामभद्राम्बा, राजम्मा चिन्नमा, नागम्मा आदि तथा उत्तरी भारत की लक्ष्मी ठकुरानी, केरली, मदालसा, मदिरेक्षण, सुभद्रा, सरस्वती, देवकुमारिका, रमादेवी इत्यादि बहुत से नाम हैं। जिनकी रचनाओं का पता लगा कर उन पर विमर्श करना अनेक नये आयाम खोल सकता है। गत 3 – 4 शताब्दियों में ऐसी कितनी महिलाएँ हुईं उनके बारे में जानकारी नहीं मिलती, किन्तु इस शताब्दी के प्रारम्भ में स्व. पंडिताक्षमाराव एक ऐसी अद्‌भुत कवयित्री हुईं जिनके बारे में विद्वानों ने शोध भी किया है, लेखन भी। वे राष्ट्रीय आन्दोलन के समर्थन में गाँधी जी पर काव्य लिखती रही थीं। उनके ग्रन्थों में सत्याग्रह गीता, उत्तर सत्याग्रह गीता आदि प्रसिद्ध हैं।